

तड़तिझंझा

चर्चा में क्यों?

भारत मौसम वजिज्ञान वभिग (IMD) के अनुसार, एक पश्चिमी वकिषोभ से उत्तर पश्चिमी भारत के प्रभावति होने का पूरवानुमान लगाया गया है, जिसके प्रभाव से कषेत्र में कई मौसमी बदलाव और वृद्धि होगी।

मुख्य बदि:

- 9 से 12 मई 2024 तक जममू-कश्मीर, लद्दाख, हमिचल प्रदेश और उत्तराखंड के अधकिंश हसिंसों में आँधी, आकाशी बजिली/तड़ति तथा तड़तिझंझा (तेज़ हवाओं के साथ बारशि) का अनुमान लगाया गया है।
- पश्चिमी वकिषोभ ऐसे चक्रवात हैं जो **कैस्पियन** या **भूमध्य सागर** में उत्पन्न होते हैं और **उत्तर पश्चिमी भारत** में **गैर-मानसूनी वर्षा** लाते हैं।
- इन्हें भूमध्य सागर में उत्पन्न होने वाले एक **अतरिकित उष्णकटबिंधीय चक्रवात** के रूप में जाना जाता है, यह कम दाब का कषेत्र होता है जो उत्तर पश्चिमी भारत में आकस्मिकि वर्षा, ओला और तुषार/धुंध लाता है।
- यह सर्दी और मानसून-पूरव वर्षा का कारण बनता है तथा उत्तरी उपमहाद्वीप में **रबी फसल** के विकास के लिये महत्त्वपूरण है।
- यह हमेशा अच्छे मौसम का अग्रदूत नहीं होता है। कभी-कभी यह बाढ़, **आकस्मिकि बाढ़**, **भू-सखलन**, धूल भरी आँधियाँ, ओलावृष्टि एवं **शीत लहर** जैसी चरम मौसमी घटनाओं का कारण बन सकता है, जिससे जान-माल की कषति हो सकती है, बुनयादी ढाँचे नष्ट हो सकते हैं और आजीविका प्रभावति हो सकती है।

रबी फसलें

- ये फसलें **रटिरीटगि/नविरतनी मानसून एवं पूरवोत्तर मानसून के मौसम के दौरान** बोई जाती हैं, **जनिकी बुआई** अक्टूबर में शुरू होती है और इस कारण ये **रबी या शीतकालीन फसल** कहलाती हैं।
- इन फसलों की कटाई **आमतौर पर गर्मी के मौसम में अपरैल और मई के दौरान** होती है।
- इन फसलों पर **नविरतनी मानसून वर्षा का ज़्यादा असर नहीं** होता है।
- प्रमुख रबी फसलें **गेहूँ, चना, मटर, जौ** आदी हैं।
- इन फसली बीज के **अंकुरण के लिये गर्म जलवायु और फसलों की वृद्धि के लिये ठंडी जलवायु** की आवश्यकता होती है।